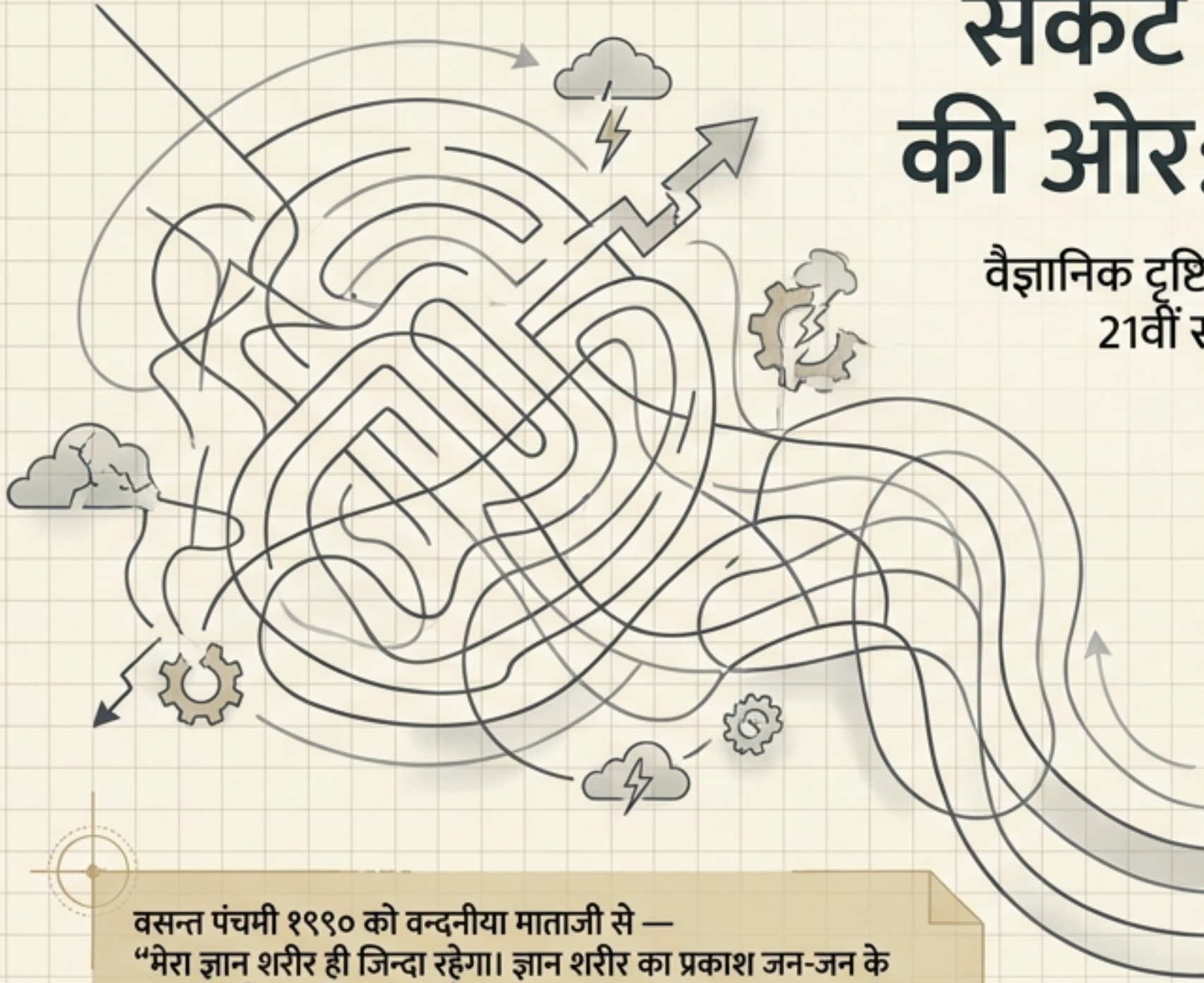


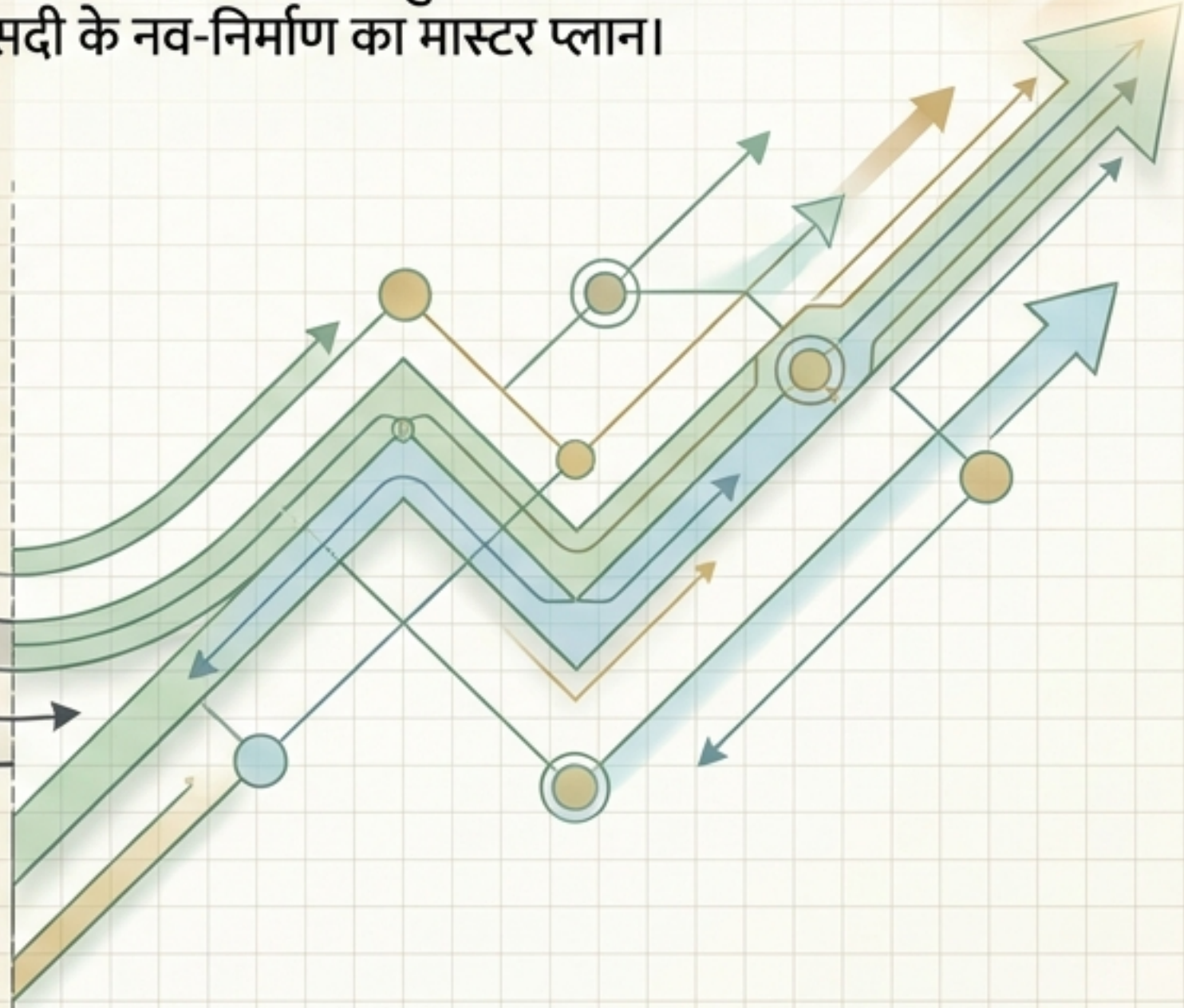
संकट से उज्ज्वल भविष्य की ओर: जागृति की रूपरेखा

वैज्ञानिक दृष्टिकोण और मानवीय सदुपयोग के माध्यम से
21वीं सदी के नव-निर्माण का मास्टर प्लान।

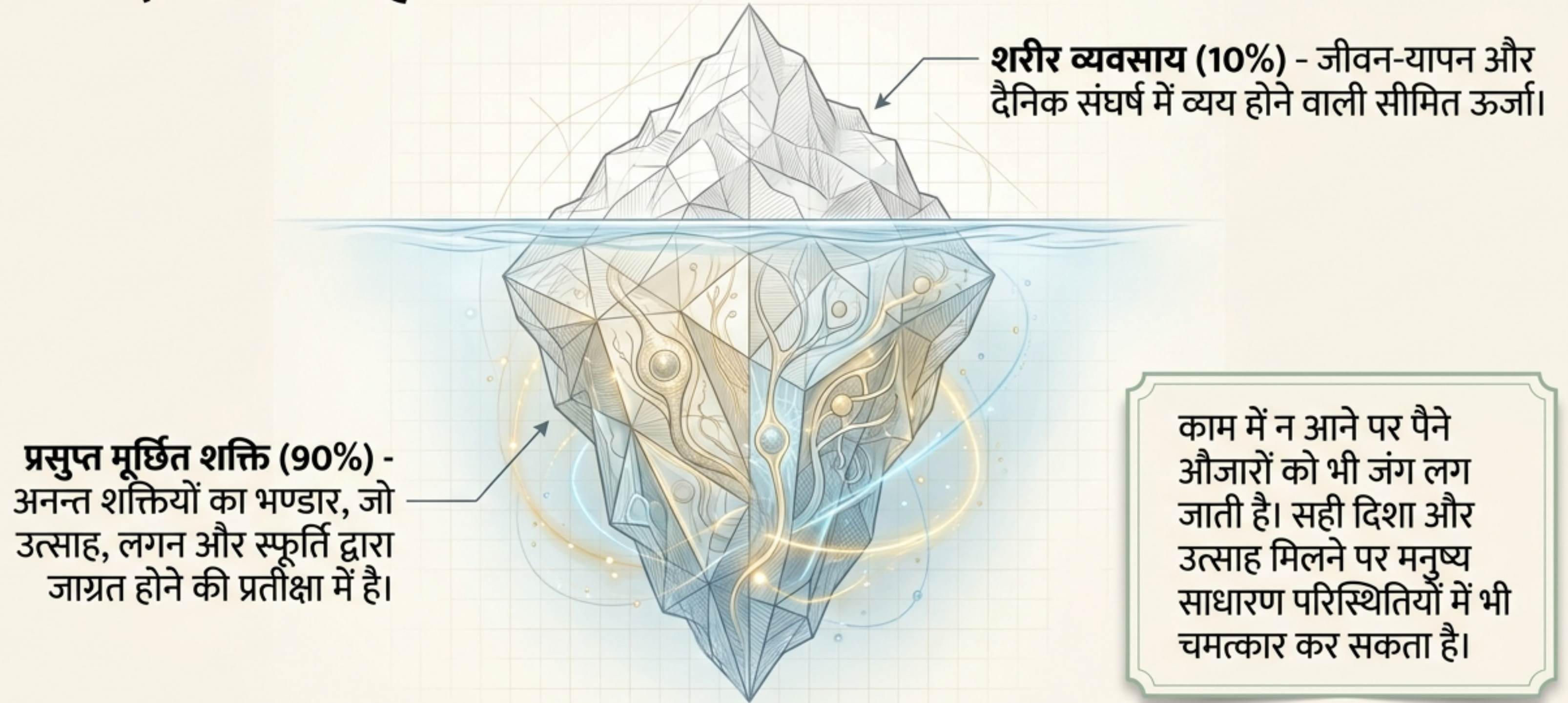


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुणदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

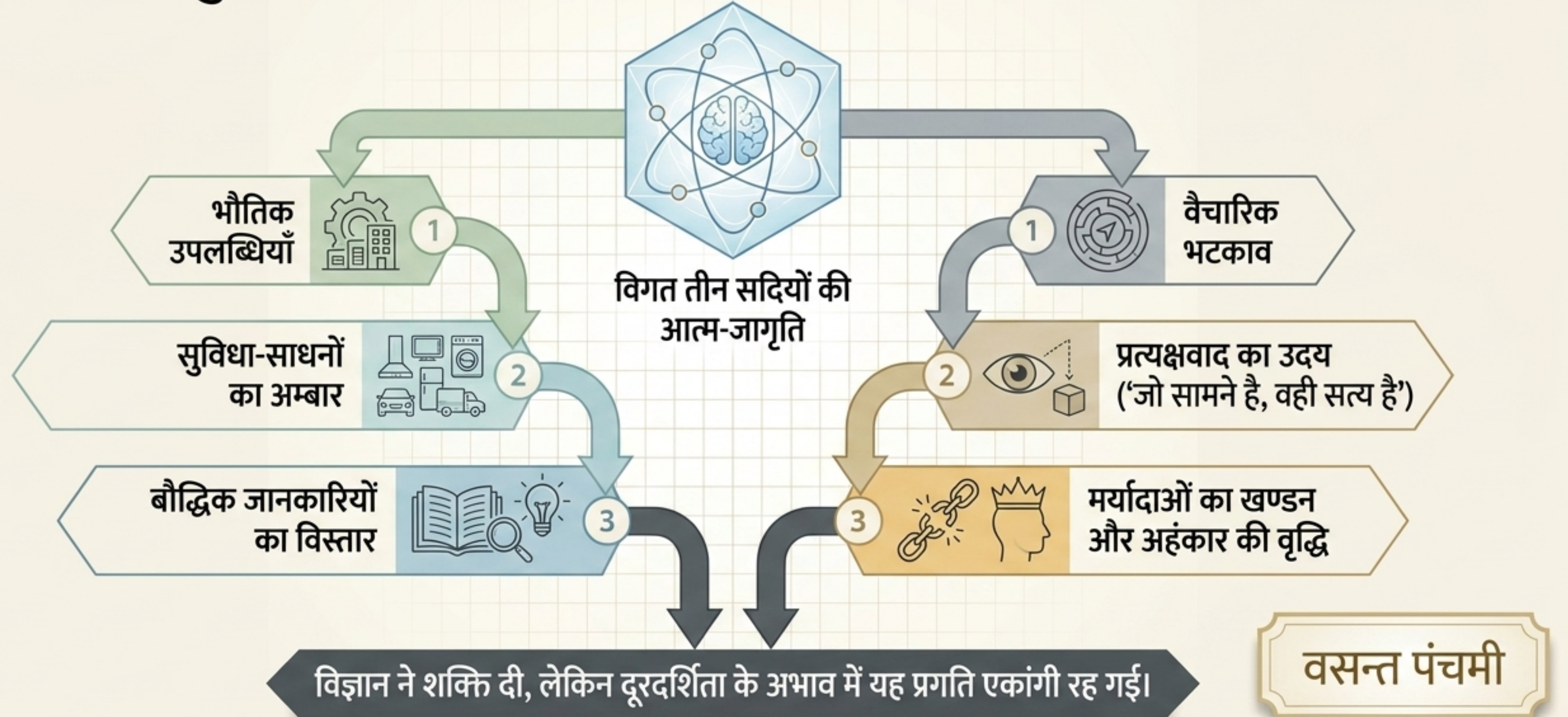


मानवीय क्षमता का हिमखण्ड



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

विज्ञान और बुद्धिवाद का विरोधाभास



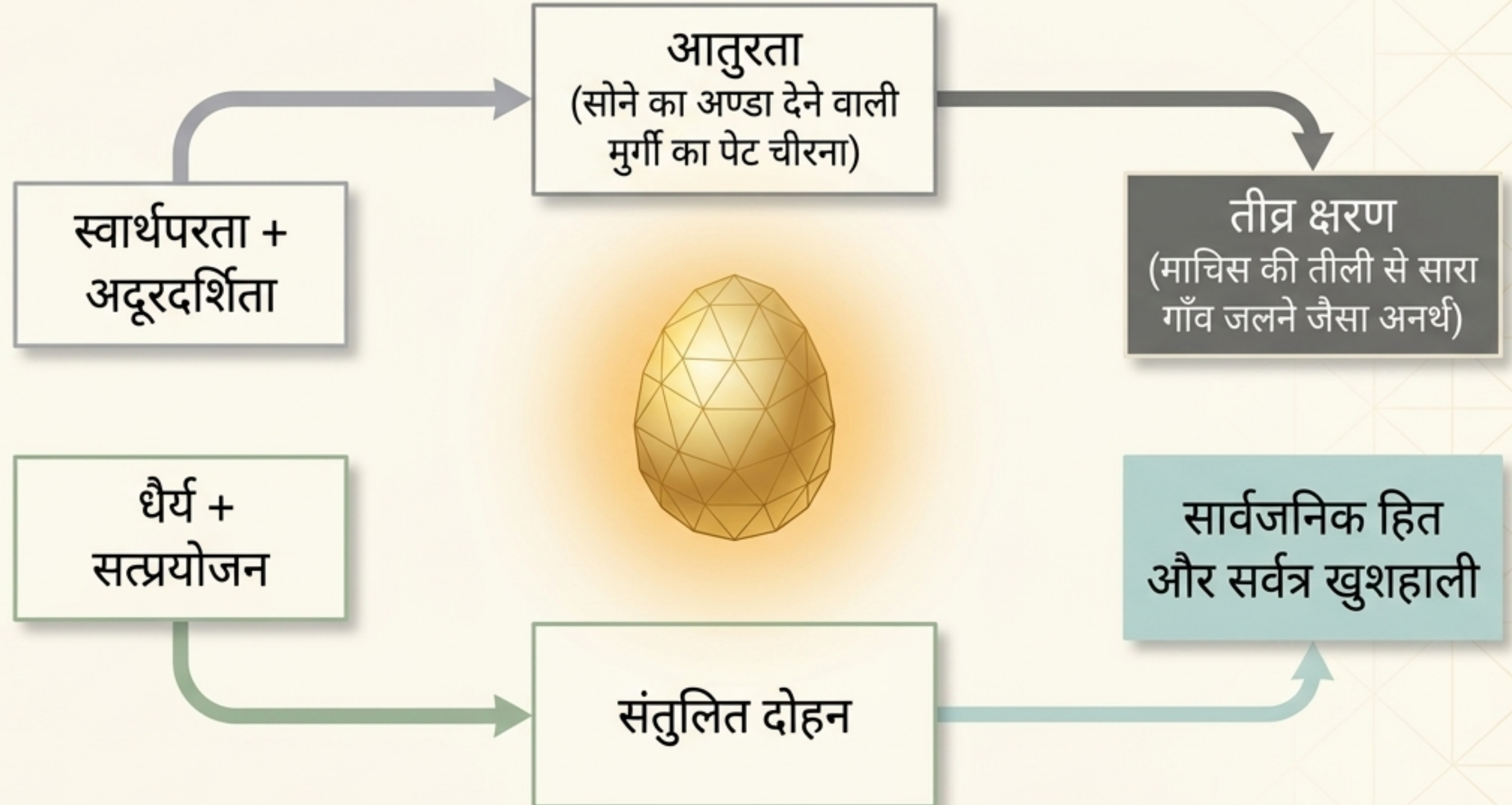
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मूल समीकरण: सदुपयोग बनाम दुरुपयोग

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही
जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के
बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने
का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के
संस्थापक)



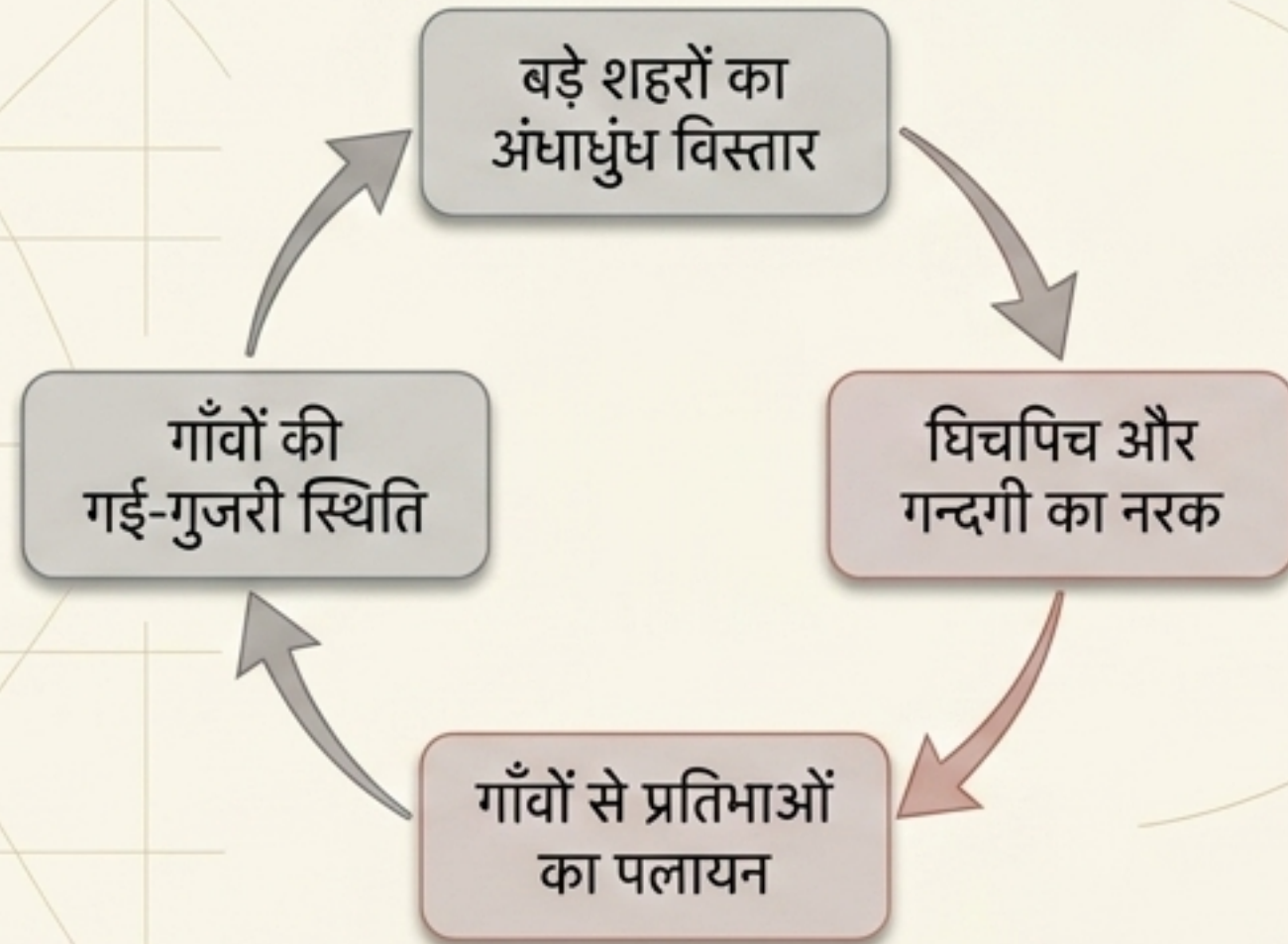
समाज का पुनर्गठन: निदान और उपचार

डोमेन	वर्तमान दुरुपयोग (Diagnosis)	उज्ज्वल विजन (Treatment)
 तकनीक	बड़े आकार की मशीनें, बेकारी और पर्यावरण संकट।	छोटे आकार की मशीनें, कम समय में निर्वाह, शेष समय कला-कौशल के विकास में।
 शासक व धनाढ्य	निजी स्वार्थ और सत्ता का केन्द्रीकरण।	वैज्ञानिक उपलब्धियों का जन-साधारण के उत्कर्ष में नियोजन।
 शिक्षा तंत्र	केवल अफसर और क्लर्क तैयार करने की फैक्ट्री।	व्यावहारिक जीवन और समाज व्यवस्था की समस्याओं का समाधान।

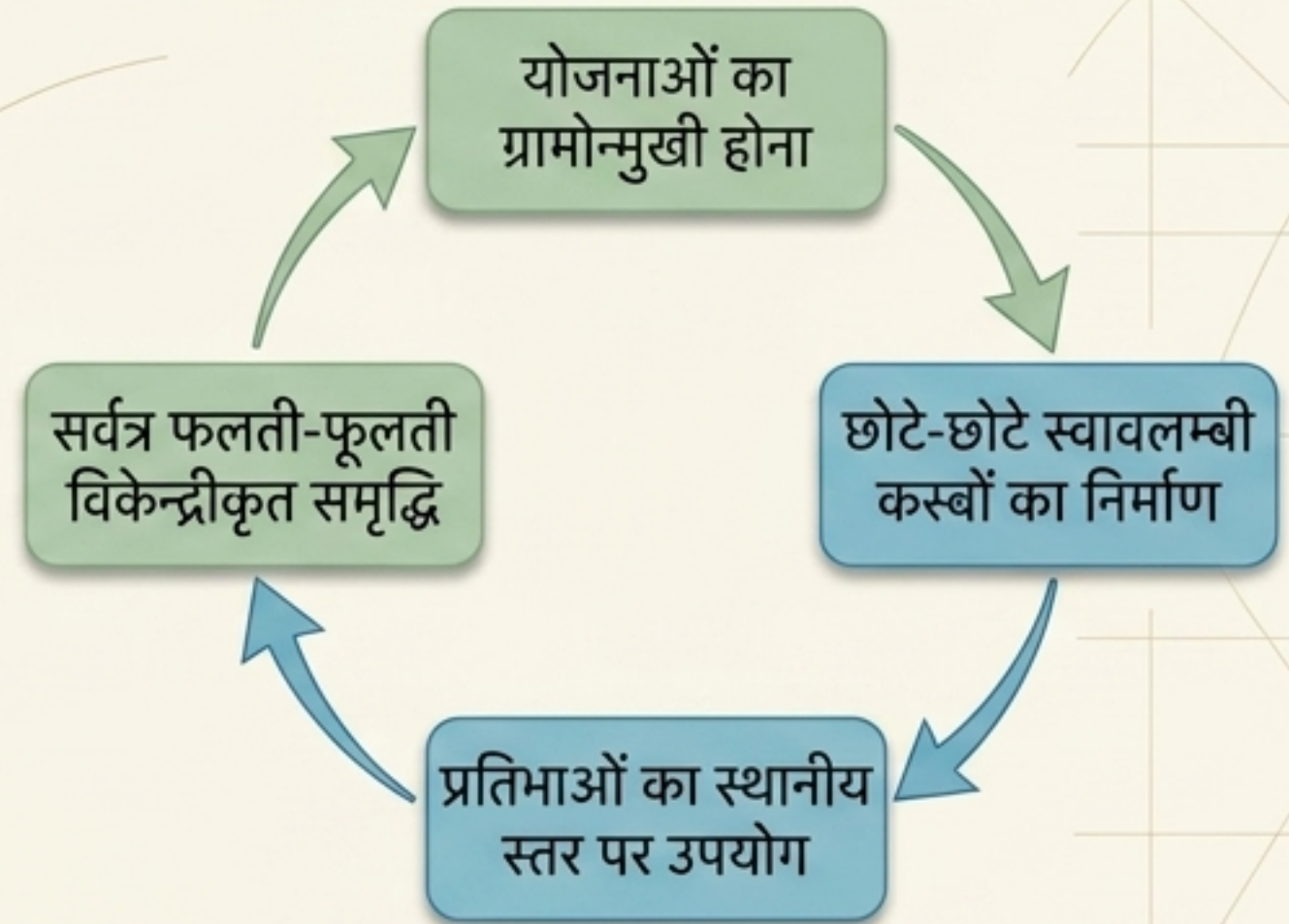
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सुनियोजन: ग्रामोन्मुखी विकास तंत्र

वर्तमान चक्र



रूपरेखा



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और अप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मो साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगक्रुधि वेदवृत्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा
आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

परिवर्तन का फ़नल: विनाश से सृजन की ओर

अवरुद्ध ऊर्जा

विश्व के आधे प्रतिभाशाली लोग, विपुल धनशक्ति और कारखाने युद्ध और आयुध निर्माण में उलझे हैं।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रांतिधर्मो साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अन्तर्राष्ट्रीय पंचायतें: युद्धों को अपराध घोषित कर विवादों का पंचायत द्वारा समाधान।

शिक्षा
संवर्धन

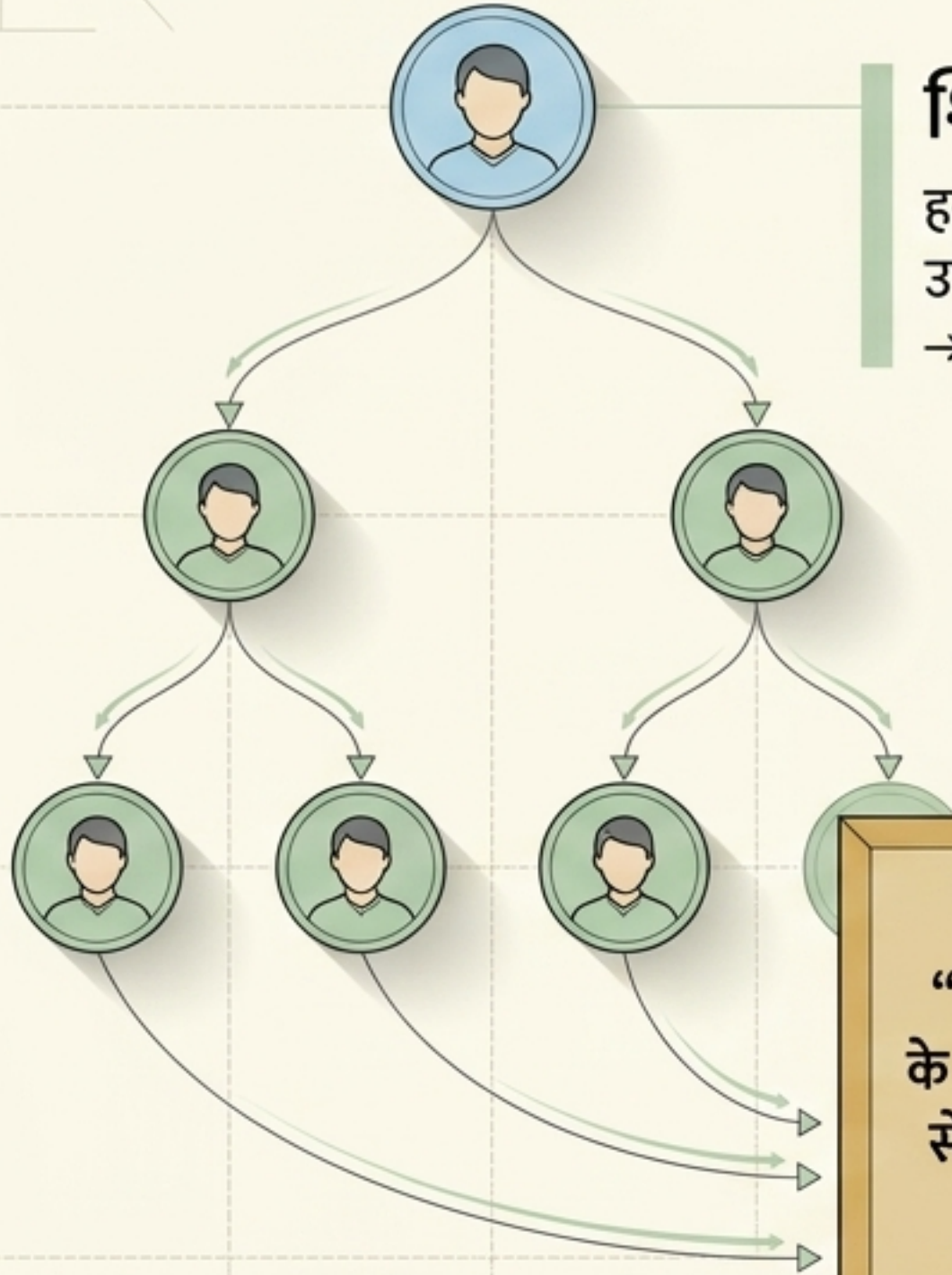
कुटीर उद्योगों
का संचालन

व्यापक
वृक्षारोपण

शिक्षा और मीडिया का गुणक प्रभाव

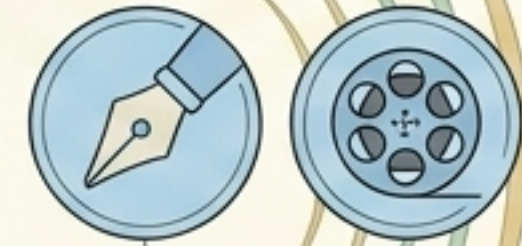
शिक्षा का एल्गोरीदम

हर शिक्षित को दो अशिक्षितों को साक्षर बनाने के
उपरान्त ही किसी बड़ी नियुक्ति का प्रमाण पत्र।
→ परिणाम: अशिक्षा की समस्या का तीव्र समाधान।



मीडिया का अनुशासन

प्रेस और फिल्म: मनुष्य की बहुमुखी शिक्षा और
सुसंस्कारिता के लिए उपयोगी मान्यताओं का ही प्रसारण।



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन
के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों
से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप
में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

ऊर्जा का क्षरण: सामाजिक कुरीतियाँ



वैज्ञानिक तथ्य: यदि बुद्धिजीवी वर्ग इन अपव्ययों के विरुद्ध झुं बाड़ बाड़ लगाए, तो यह यह अपार ऊर्जा उर्जा सत्प्रयोजनों में लग सकती है।

खोखली प्रगति का भ्रम

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)



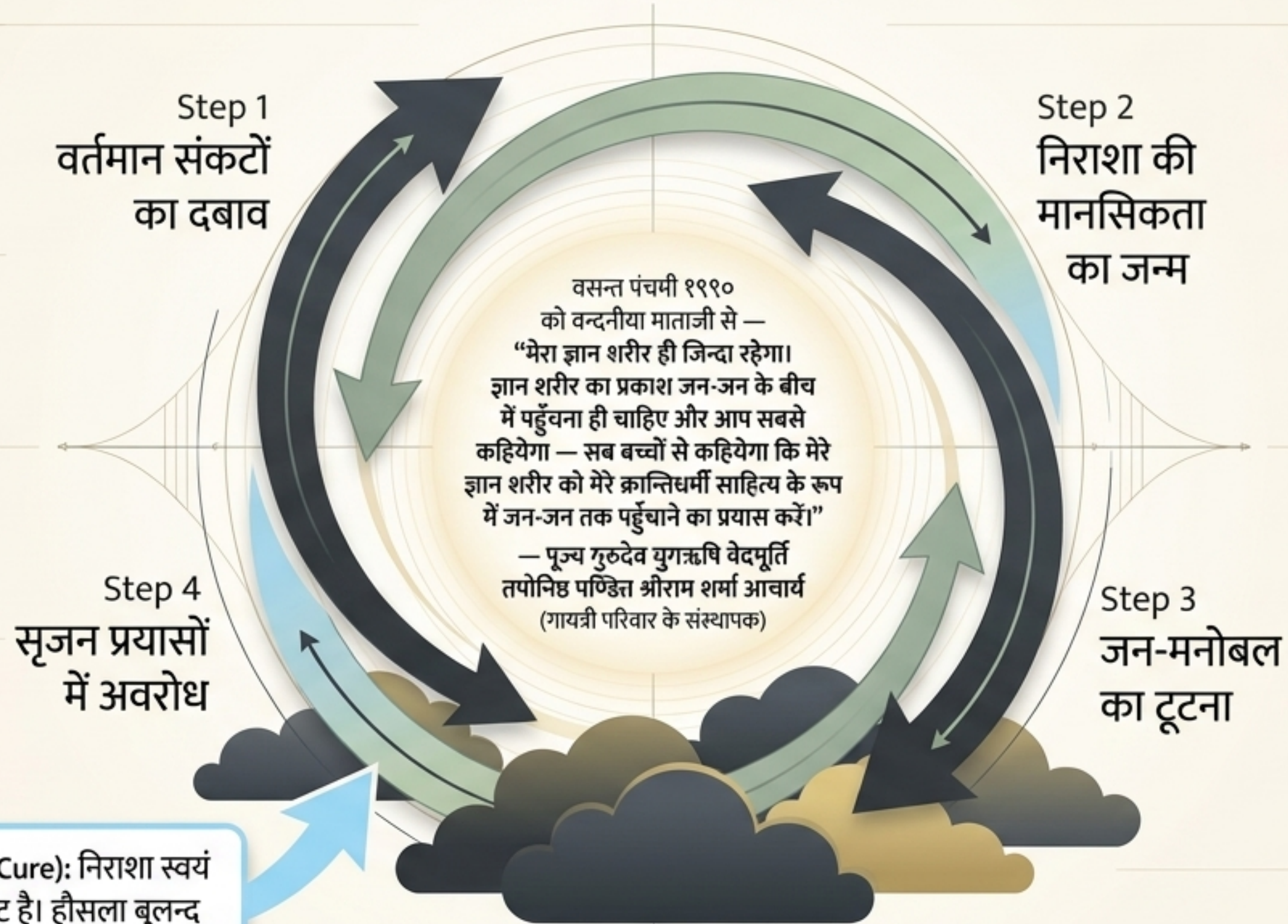
बाहरी आवरण: ठाट-बाट की चकाचौंध, विस्तृत वैभव और चमक-दमक, चतुरता के नाम पर मूर्खता।

बाहरी आवरण: ठाट-बाट की चकाचौंध, विस्तृत वैभव और चमक-दमक, चतुरता के नाम पर मूर्खता।

आंतरिक वास्तविकता: मानसिक दरिद्रता, चिन्ता, उद्विग्नता और आशंका, गहराता हुआ खोखलापन।

निष्कर्ष: भौतिक प्रगति के बावजूद मनुष्य मनोवैज्ञानिक रूप से 'प्रेत-पिशाच' स्तर का जीवन जी रहा है जहाँ किसी को चैन नहीं।

निराशा का चक्रव्यूह: सबसे बड़ा संकट

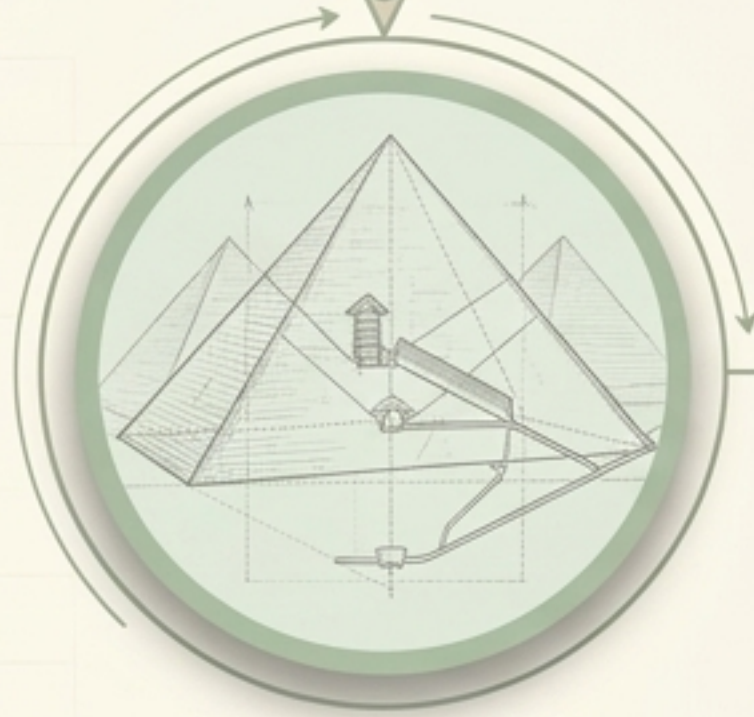


हस्तक्षेप बिन्दु (The Cure): निराशा स्वयं
में समस्या से बड़ा संकट है। हौसला बुलन्द
हो तो प्रतिकूलताओं को भी मोड़ा जा सकता है।

मानवी संकल्प के ऐतिहासिक साक्ष्य

आशावादी साहस भरे वातावरण में सम्पन्न हुए असम्भव कार्य।

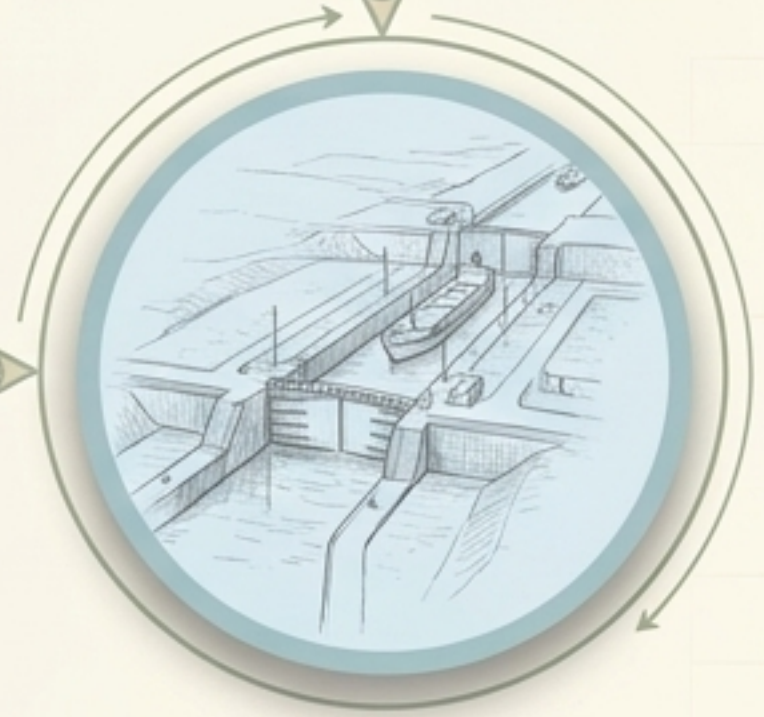
जब कई व्यक्ति मिलकर 'हेईशा' जैसी जादुई हुँकार भरते हैं, तो असम्भव सम्भव हो जाता है।



मिस्र के पिरामिड - संयुक्त शक्ति और अद्भुत ज्यामितीय नियोजन।



चीन की विशाल दीवार - सामूहिक सुरक्षा के लिए अकल्पनीय जन-श्रम।



स्वेज और पनामा नहर - प्रकृति के अवरोधों को चीरकर मार्गों का निर्माण।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

जन-मनोबल का विज्ञान

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-
जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य पुरुषोत्तम सुगन्धर्व वेदगुरु
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराय शर्मा ज्ञानार्थ
(गावडी परिवार के संस्थापक)

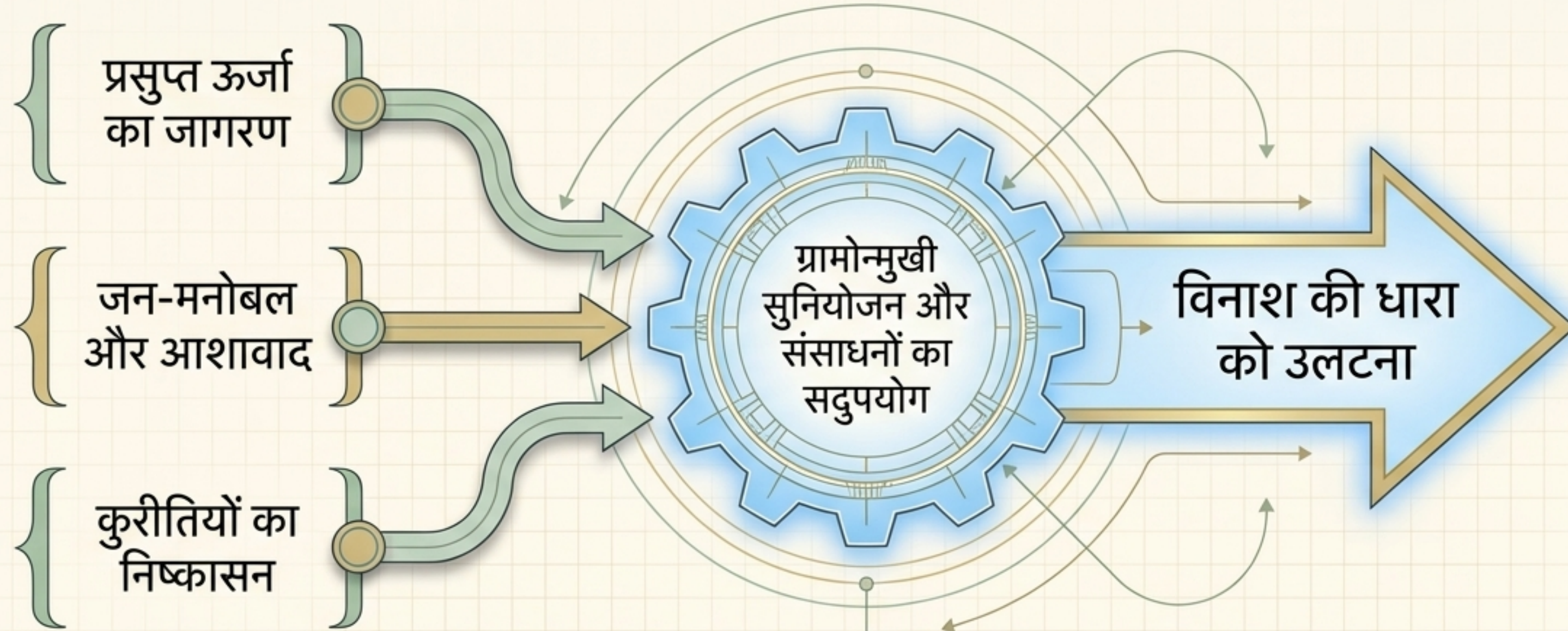
निराशा
अवसाद क्षेत्र

विंस्टन चर्चिल का ‘V for Victory’ नारा।
द्वितीय विश्व युद्ध में हारते ब्रिटेन का मनोबल बढ़ाना।
परिणाम: इस जादुई हुंकार ने युद्ध से बिस्मार हो रहे
यूरोप को जगाकर खड़ा कर दिया।

उत्कर्ष
सक्रियता क्षेत्र

युद्धोत्तर जापान का संकल्प।
हिरोशिमा की विभीषिका के बावजूद।
परिणाम: टूटा हुआ जापान सृजन प्रयोजनों में जुटा
और आज विश्व की आर्थिक मण्डी उसके हाथ में है।

अन्तिम संश्लेषण: भागीरथी प्रयास



यह कार्य भागीरथी अवश्य है, किन्तु असम्भव नहीं, पूर्णतः सम्भव है।
क्रिया बदलेगी, तो प्रतिक्रिया भी बदलेगी।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश क्लृप्त गिर आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को घेरें क्लाहिरय के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगम्भूषि वेदपूति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

21वीं सदी: बुद्धिवाद से प्रज्ञा की ओर

- घड़ी का पेंडुलम वापस सही दिशा में लौट रहा है।
- विज्ञान और धर्म (मर्यादाओं) का समन्वय एक स्वर्णिम युग की आधारशिला रखेगा।



- उज्ज्वल भविष्य मात्र एक परिकल्पना नहीं, एक वैज्ञानिक और ऐतिहासिक सुनिश्चितता है।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” – पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)